हिंदी के आधुनिक कवियों में मैथिलीशरण गुप्तका स्थान सर्व प्रमुख है । उन्होंने अपनी काव्यसाधना व्दारा हिंदी साहित्य के भण्डार को समृध्द बनाया है । खडी बोली को काव्य भाषा के रूपमें प्रतिष्ठित करने का कार्य गुप्तजीने किया । आधुनिक युगमें मैथिलीशरण गुप्त ऐसे कवि है, जिन्हें राष्ट्र-कवि, युग का प्रतिनिधि कवि, भारतीय संस्कृति के आख्याताकवि एवं नवयुग का वैतालिक संज्ञाओंसे अभिहित किया जाता है। मैथिलीशरण गुप्त वैष्णव भक्तिसे प्रभावित कवि थे, उनके जीवनपर गाँधीवाद का प्रभाव था । गुप्तजी का रचनाकाल व्दिवेदीयुगसे लेकर प्रयोगवादकालतक प्रशस्त है। मैथिलीशरण गुप्त को राष्ट्रकवि के रूपमें ख्याति उनके अपने जीवनकाल में ही मिल गयी थी। गुप्तजी की राष्ट्रीय वाणीमें पुनरुत्थान का भाव है। उत्थान के साथ जुडा हुआ है । राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त सच्चे अर्थोंमें शुध्द चेतना जागृत सांस्कृतिक संवेदना के कवि है, उन्होंने अन्त:प्रकृति और बाहयप्रकृतिमें काव्य की संवेदना के स्तरपर सर्वजनहितकारी सामंजस्य स्थापित किया है। राष्ट्रकवि - मैथिलीशरण गुप्त का हिन्दी काव्यजगत में आविर्भाव उस समय हुआ था, जब देश राष्ट्रपिता महात्मा गांधीके अहिंसात्मक नेतत्त्व में पराधीनता के विरूध्द स्वातंत्र्यसमर लड रहा था, ब्रम्हसमाज, आर्यसमाज, प्रार्थनासभा जैसे अराजनैतिक संगठन सामाजिक, सांस्कृतिक पुनर्जागरण का शंखनाद कर रहे थे ।

सभी विद्वान मान्य करते हैं कि मैथिलीशरण गुप्तजी का व्यक्तित्व महान था। उनके विचार, चिन्तन, और मानवीय गुणों के कारण वे महान माने जाते थे। खद्दरधारी धोती व कुरता, चप्पल, गांधीटोपी, गले में कंठी, माथेपर तिलक और ओंठोपर राम का नाम। " साँवला रंग शुध्द भारतीय। लम्बी काया, इकहराबदन, सौम्य आकृति, आँखों में चमक – गांधीजीवाली, ओंठोपर मुस्कान और चाल में उत्साह। ऊपरसे देखने में देशभक्त और भीतर से कवि। हृदय ऐसा कि सब को गले लगाने को हर क्षण बेचैन। "[१] ऐसे सीधे सरल थे।

गुप्तजी के विषयमें किसी प्रकार की जीवनी अथवा स्वयं उनकी आत्मकथा उपलब्ध नहीं होती है। परन्तु फिर भी उनके विषय में जो विवरण उपलब्ध होता है, उससे यह संकेत मिलता है, कि गुप्तजी का जन्म ३ अगस्त १८८६ में हुआ था। उनके पुर्वज बुन्देलखण्ड के निवासी थे। राष्ट्रकवि की जन्मभूमि चिरगाँव नामक गाँव है। वह जाति के वैश्य थे। इनके पिता सेठ रामचरण कविताएँ लिखते थे। बालक मैथिलीशरणने एकबार एक छप्पय अपने पिताजी की कापी में लिख दिया। जब सेठजीने उसे पढा तो अपने पुत्र को आशीर्वाद दिया कि " तू आगे चलकर हजार गुनी अच्छी कविता करेगा "[२] पिता का यह कथन सत्य सिध्द हुआ। पिता की तरह माता काशीबाई भी ममतामयी थी। रामोपासिका माता का भी बालक गुप्तजीपर भारी असर पडा।

१] "मैथिलीशरण गुप्त", – शरद ओंकार – पृ. ९

२] "हिन्दी के आधुनिक प्रतिनिधि कवि" –डॉ. द्वारिकालाल शर्मा – पृ. २१

गुप्तजी के पाँच भाई थे, दो गुप्तजीसे बडे और दो छोटे। श्री. महारामदासजी और रामकिशोरजी बडे भाई थे और सियारामशरण और चारुशीलाशरणजी छोटे भाई। गुप्तजी के सुपुत्र उर्मिलाचरण।

[अ] बाल्यावस्था :

गुप्तजी का बचपन अपने पिता के लालन पालनमें सुखपूर्वक बीता। " रामचरणजी बडे सुसम्पन्न गृहस्थ थे। वे उदार, विनयशील एवं सात्त्विक वृत्ति के थे। " [१] माता काशीबाई व्रत आदि करने में अत्यन्त रुचि लेती थी। उन्नीस वर्ष की अवस्थातक कविने अपनी माता के वात्सल्य को प्राप्त किया। अपनी माता के निधन के पश्चात भी वे कुछ रचना लिखकर माता का स्मरण करते रहे। काका भगवानदासजी रामशरण की मृत्यु के बाद कवि के अभिभावक रहे थे। भगवानदासजी बडे सूझबूझ के व्यवसायी व्यक्ति थे। उनकी व्यवसायी सूझबूझ का प्रभाव भी बालक गुप्त पर पडा।

[आ] शिक्षा-दीक्षा :

चिरगाँव में गुप्तजी पुराने पाँचवे दर्जेतक प्राइमरी पाठशाला में पढे। वे चिरगाँव की पढाई के बाद मेकडानल हाईस्कूल झाँसी में पढे और पहले वर्ष इबल परीक्षा पास की परन्तु दूसरे वर्ष परीक्षा के समय रामलीला की मण्डली में ओरछा गये। " गुप्तजी के पिता का उद्देश्य पुत्र को पढाकर "डिप्टी कलक्टर" बनाने का था, पर उनके भाग्य में कवि बनना बदा था। झाँसी के जीवन के प्रथम वर्ष में उन्होने इबल इम्तहान पास किया, किन्तु पीछे वे पढने में आलसी और विलासप्रिय निकले। " [२]

१] "मैथिलीशरण गुप्तके पात्रों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन" - डॉ. राम कुलकर्णी - पृ. ५१

२] "मैथिलीशरण गुप्त" डॉ. आनंद प्रकाश दीक्षित - पृ. २

कवि के पिता रामशरणजीने पुत्र को झाँसी से वापस बुला लिया फलस्वरूप स्कूली शिक्षा समाप्त हो गयी । इसके पश्चात् उन्होंने "रामयशदर्पण", "चन्द्रकान्ता", "चन्द्रकांता संतति", "सजला रजनीचरित" तथा अनेक अनूदित कृतियाँ पढीं । उन्होंने स्वाध्याय आरम्भ किया । संस्कृत, बंगाल, तथा अन्य भाषाओं के विभिन्न ग्रन्थो का अध्ययन करने के साथही साथ उन्होंने हिन्दी साहित्य का विस्तार से अध्ययन किया ।

[इ] साहित्यिक प्रेरणा और प्रभाव :

गुप्तजी को अपने शैक्षणिक कालमेंही साहित्य सृजन की प्रेरणा मिली । गुप्तजीने बाल्यावस्था में ही अपने मातापिता के धार्मिक व्यक्तित्व से प्रभावित होकर काव्यरचना आरम्भ की । अँगरेजी, हिन्दी, संस्कृत, उर्दु, तथा बंगला के साहित्यने भी उन्हे प्रभावित किया । उन्होने श्री. दुर्गादत्त पन्तजीसे "बृहुत्रयी" और "लघुत्रयी" के प्रसंग सुने तथा काशीप्रवासी प. अयोध्यानाथजीसे उनकेव्दारा रचित संस्कृत श्लोक सुने । प्राय: संवत १९०१ में गुप्तजीको सर्वप्रथम काव्यप्रेरणा जागृत हुई । - "नकली किला" भारत-भारती तथा अन्य रचनाएँ प्रस्तुत करतेसमय उन्हें ब्रिटीश सरकार का कोप भाजन भी बनना पडा । तत्कालीन अनेक प्रादेशिक सहकारोंने इनके कतिपथ अंशो को जब्त कर लिया । अनेक प्रतिकूल समीक्षाओंने भी उन्हें मानसिक संत्रास दिया । हिन्दी में अपने समय के समस्त साहित्य-ग्रंथोंका अध्ययन गुप्तजीने किया । इनमें रीति-ग्रन्थ, भक्तिपरक रचनाएँ और साहित्यशास्त्र ग्रन्थ विशेषरूपसे उल्लेखनीय है । मैथिलीशरण गुप्तजीको साहित्यिक प्रेरणा प्राय: आचार्य महावीरप्रसाद व्दिवेदी सेही प्राप्त होकर क्रमश: वृध्दिगत होती जाती है । जबतक आचार्य महावीरप्रसाद व्दिवेदी थे तबतक वे उनके कहनेपरही या संकेतपरही कार्य करते रहे । गुप्तजी को काव्य श्रेष्ठ स्थानपर आचार्य महावीर प्रसाद व्दिवेदीजीनेही पहुँचाया था । व्दिवेदीजी की प्रेरणा

उनके जीवन में अत्यंत फलदायी सिध्द हुई है । किंतु मैथिलीशरण गुप्तने प्रमुख रूपमें आचार्य महावीर प्रसाद व्दिवेदीजीसे दीक्षा प्राप्त की थी, फिर भी उनको अपने बंधु, सखा एवं विभिन्न मित्रोंसे समयसमयपर जो प्रेरणा मिली थी वह भी महत्वपूर्ण है । गुप्तजीने अपनी रचनाओंमे तथा अन्यत्र किये गये वक्तव्यों में इनके प्रति अपना ममत्व एवं कृतज्ञता का भाव व्यक्त किया है ।

(ई) विवाह एवं परिवार :

संवत् १९५२ में नौ वर्ष की छोटी अवस्थामें गुप्तजी का प्रथम विवाह हुआ । संवत १९५७ में नववधु का पतिगृह में व्दिरागमन हुआ। इसके तीन वर्ष पश्चात संवत १९६० में प्रसवपीडा में उनकी पत्नी की मृत्यु हो गयी । संवत् १९६१ में गुप्तजीके छोटे काकाने उनका दूसरा विवाह कर दिया । गुप्तजी की पत्नी लगभग आठ वर्ष तक जीवित रही । उन्होंने एक पुत्र और एक पुत्री को जन्म दिया जो शैशवकालमें ही मृत्यु को प्राप्त हो गये । इसी कष्ट में ही उनकी दूसरी पत्नी की भी मृत्यु हो गयी । इसके पश्चात् गुप्तजीने बहुत दबाव पडनेपर भी विवाह करना अस्वीकार कर दिया । परंतु संवत् १९७१ मे मुंशी अजमेरी के अनुरोध से उनका तीसरा विवाह हुआ । तीसरी पत्नी श्रीमती सरयूदेवीने नौ सन्तानों को जन्म दिया, जिनमें आठ अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए । संवत १९८३ में उनके अन्तिम पुत्र उर्मिलाचरण का जन्म हुआ जो उनका वंश चला रहे है । इतनी संतानो की मृत्युने गुप्तजीके भावजगत को विशेष रूपसे प्रभावित किया । सन १९११ के लगभग वह शिरो रोग से पीडित हुए १९४१ में उन्हें कारावास भी हुआ । परन्तु इन सभी घटनाओं को उन्होंने धैर्य और साहस से सहन किया । गुप्तजी का जीवन आपदाओं और यातनाओंसे घिरा हुआ था ऐसा दिखाई देता है ।

[3] <u>मित्र समाज</u> :

मैथिलीशरण गुप्तजीके साहित्यिक कृतित्वपर आरंभमे सबसे अधिक प्रभाव उनके पिता का पडा । परन्तु परिवार के साथ साथ अनेक मित्रोंसे प्रेरणा मिली । इसके अतिरिक्त गुप्तजीके निकटतम व्यक्ति स्व. मुंशी अजमेरी थे । वह उनके परिवार का ही अंग थे । गुप्तजी के समस्त साहित्यिक कार्यकलापमें किसी न किसी रूपमें उनका योगदान अवश्य रहता था । रामकृष्णदास, जयशंकरप्रसाद, बालकृष्ण शर्मा, राजा रामपाल सिंह, डॉ. वृन्दावनलाल वर्मा, बालमुकुन्द गुप्त, "नवीन" महादेवी वर्मा, डॉ. श्याम सुन्दर दास, श्री. केशवप्रसादमिश्र, डॉ. हाजारी-प्रसाद व्दिवेदी, कृष्णदेव, प्रसाद, वासुदेवशरण अग्रवाल, "अज्ञेय" जैनेद्रकुमार, डॉ. नगेद्र तथा सेठ गोविंददाससे भी उनका घनिष्ठ सम्पर्क रहा था । अन्य साहित्यिक बन्धुओंमे आचार्य महावीर प्रसाद व्दिवेदी से बहुत प्रभावित थे और उन्हें अपना काव्यगुरु मानते थे । "राष्ट्रीय नेताओं में राष्ट्रपिता पूज्य बापूजीसे गुप्तजीका घनिष्ठ सम्बन्ध था । महामना मालवीयजी और. डॉ. राजेन्द्रप्रसाद से भी उनका सम्बन्ध सुदृढ था । गुप्तजी का श्री. जवाहरलाल के प्रति बडा आदर है और विनोबाजी के प्रति बडी श्रध्दा भी । " [१] इसप्रकार गुप्तजीका सम्बन्धवृत्त अति - विशाल है, आज भारत भरमें उसकी व्याप्ति है ।

१] मैथिलीशरण गुप्त और वल्लत्तोल का तुलनात्मक अध्ययन "
के. एस. मणि - पृ. ४५

[ऊ] विचारधारा और जीवनदर्शन :

गुप्तजी के साहित्यिक व्यक्तित्व में सादगी और गम्भीरता का विशेष स्थान है । गुप्तजी का कवित्व विशिष्ठ था । महात्मा गाँधी के जीवनदर्शन से उन्होंने प्रेरणा और प्रभाव ग्रहण किया । पारिवारीक संस्कारो के फलस्वरूप उनके जीवनमें उदारता, कर्तव्यशीलता, और धर्मनिष्ठा मिली है । उनकी कृतियोंमें मानवतावादी दृष्टीकोण भी दृष्टिगत होता है । काव्य भावना पूरक था, सामाजिक मुल्योंमें नैतिकता को सर्वोच्च स्थान दिया है । सभ्यता, संस्कृति, समाज, धर्म आदि के आदर्शों का उन्होंने जातिय और राष्ट्रीय भावनाओंसे सामंजस्य प्रस्तुत किया है । गुप्तके अनेक कृतियोंमें जीवनदर्शन का स्पष्ट रूप दिखायी देता है ।

आदर सन्मान :

" गुप्तजी को अपने जीवन में बहुत आदर सन्मान प्राप्त हुए, किन्तु वे प्रतिष्ठामोही व्यक्तियों में नही थे " [१] भारत-भारतीने गुप्तजीको राष्ट्रकवि के उँचे सिंहासनपर बिठाया "साकेत" ने उसको सार्थक किया । सन् १९३५ में हिन्दुस्तानी एकादमीने पाँच सौ रुपये का पुरस्कार और साहित्य सम्मलनने १९३७ में बाहर सौ रुपये का " मंगला प्रसाद " पुरस्कार दिये है ।

सन् १९३६ में गुप्तजी की पचास वर्ष की आयुमें जगह जगह स्वर्ण - जयन्ती मनायी गयी । १९४६ में काशी की "नागरी प्रचारिणी "

- -

१] "मैथिलीशरण गुप्त " - आनन्द प्रकाश दीक्षित - पृष्ठ: ६

- -

सभाने कवि हीरक - जयन्ती का आयोजन किया और उन्हें दस हजार रुपये भेट में दिये । सन १९४६ में ही साहित्य सम्मेलन के कराची अधिवेशन में गुप्तजी " साहित्यवाचस्पती " की उपाधि से सम्मानित किये गये । सन १९४८ में आगरा विश्वविद्यालयने कवि गुप्तजी को डी. लिट की सम्मानित उपाधि प्रदान की । भारत सरकारने सन १९५४ को कवि गुप्तजी को "पद्मभूषण" की सम्मानित उपाधि दी, जिसकी सनद राष्ट्रपति डॉ. राजेंद्रप्रसाद व्दारा सन् १९५५ के लोकतन्त्र के दिवसपर भेंट की गयी । सन १९५४ में काशी हिन्दू विश्वविद्यालयने गुप्तजी को हिन्दी विभाग का सम्मानित "प्रोफेसर" नियुक्त किया । १९५२ में गुप्तजी भारतीय राज्यसभा में राष्ट्रपतिव्दारा छ: वर्ष के लिए मनोनीत सदस्य हुए । अवधिकी पूर्तिपर गुप्तजी दुबारा फिर मनोनीत हुए ।

देहावसान :

आजीवन बीमारी और मानसिक कष्ट इन कारणोंसे उनकी शारिरीक शक्ति उत्तरोत्तर क्षीण होती गई । अपने जीवनके अन्तिम दिनोमें चिरगाँव में ही रहने लगे थे । १२ दिसम्बर १९६४ को रात्री में उनकी तबियत सहसा खराब हो गयी और रात्रीमें एक बजकर दस मिनटपर हृदय की गति रुक जाने के कारण देहावसान हो गया ।

कृतित्व :

अपने सुदीर्घ रचनाकाल में मैथिलीशरण गुप्तजीने बहुसंख्यक कृतियों की रचना की है । इनमें उनकी विभिन्न विषयक रचनाएँ है । गुप्तजीने १५ वर्ष की अवस्थासे ही साहित्य रचना का आरंभ किया था । पिता की प्रेरणा और प्रभाव से धार्मिक छंदो की रचना की थी । खण्डकाव्य, मुक्तककाव्य तथा प्रबंधकाव्य गुप्तजीने लिखे है, इसमे पौराणिक, सामाजिक,

ऐतिहासिक और राजनीतिक आदि विषय है। उन्होंने कुछ अनुवाद भी किये हैं और नाट्यरचनाएँ भी प्रस्तुत की है। यहाँ पर मैथिलीशरण गुप्तजीकी विभिन्न कृतियों का संक्षेप में परिचय प्रस्तुत किया है।

१] <u>रंग में भंग</u> :

हिन्दी काव्य जगत् को यह कवि गुप्तजीकी पहली देन है। इसका प्रकाशन सन १९१० में हुआ। एक विवाह की शोकांत कथा ही इसमें वर्णित है। इसमें बूंदी और चित्तोड के राज्यों से सम्बन्धित एक रोचक कथावस्तुपर काव्य प्रणयन हुआ है। कवि गुप्तजीने इसमें मध्ययुगीन नीतिवादिता, आदर्शधर्म, कर्तव्य भावना आदि का सुन्दर चित्रण किया है। राजपूतों के मिथ्याभिमान का तथा उनके वीरत्वादर्श एवं स्त्री धर्म के सती पक्ष की महानता का वर्णन भी इसमें हुआ है। कथा की पृष्ठभूमि कोरी काल्पनिक नहीं, ऐतिहासिक है।

२] <u>जयद्रथ वध</u> :

इसका प्रकाशन सन् १९१० में हुआ। अबतक इस ग्रंथ के ६२ संस्करण प्रकाशित हो चुके हैं। यह एक खण्डकाव्य है, जिसमें सात सर्ग है। इसका कथानक महाभारत से लिया गया है। पात्रों के चरित्र का उज्ज्वल चित्रण काव्य में हुआ है। इसमें अभिमन्यु वध की घटना से लेकर जयद्रथवध तक की घटना का वर्णन किया गया है। इसमें अभिमन्यु एवं भगवान कृष्ण के बुध्दिचातुर्य का वर्णन किया गया है "जयद्रथ के माध्यमसे कविने यह स्पष्ट करने का प्रयत्न किया है कि शूरवीर यदि अपनी शक्ति दुरुपयोग करता है, तो वह अपने जीवन में असफल रहता है और प्रत्येक व्यक्ति को अपने कृत्यों के अनुसार फल मिलता है सामाजिक प्रतिष्ठा भी इन्ही कृत्योंपर निर्भर होती है।" १

१] "मैथिलीशरण गुप्त के पात्रों का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन" - डॉ. राम कुलकर्णी - पृ. ३२८

३] <u>भारत - भारती</u> :

भारत-भारती का सर्वप्रथम प्रकाशन सन १९१२ में हुआ । भारतीयों के हृदयमें राष्ट्रीय चेतना जागृत करनेमें इस पुस्तक का विशेष हाथ रहा है । भारत-भारती में भारत के अतीत गौरव की गुणगाथा, और वर्तमान दलित दशा दिखाने का काम किया है, और आलसपूर्ण निद्राका परित्याग करके उज्ज्वल भविष्य की ओर अग्रसर होने का उद्बोधन किया है । एक समय ऐसा था कि जब भारत-भारती के पदय प्रत्येक हिन्दी भाषी के कंठ पर थे ।

४] <u>पदयप्रबन्ध</u> :

सन १९१२ में गुप्तजी की "पदयप्रबन्ध" शीर्षक कृति का प्रकाशन हुआ । यह स्फुट काव्य ग्रन्थ है । इसमें विविध कविताओंका संग्रह है, जो अनुभूतिपरक तथा उपदेशात्मक आख्यानोंपर आधारित है । विविध विषयगत पदय संग्रह होने के कारण इसमें सभी रस आ गये है विषय-विधा एव कलाशिल्प की दृष्टि से "पदय-प्रबन्ध" भविष्य के राष्ट्रकवि की भूमिका है ।

५] <u>मुसद्दस हाली</u> :

सन् १८७९ में "मुसद्द से हाली" शीर्षक ग्रंथ का प्रकाशन हुआ था । इसमें गुप्तजीने इस्लामधर्म प्राचीन गौरव की गाथा को भाषाबध्द किया है । इसकी शैलीमें फारसी प्रभाव होने के कारण पर्याप्त अभिनवत दृष्टिगत होती है ।

६] <u>मुसद्दस से कैफी</u> :

सन् १९०५ में गुप्तजी की "मुसद्द से कैफी" शीर्षक कृतिका प्रकाशन हुआ । गुप्तजीने इस्लामधर्म की गौरवगाथा के उद्भव

LIBRARY

और विकासपर प्रकाश डाला था, उसीप्रकारसे प्राचीन गौरव, वर्तमानपतन स्थिती और भावी प्रगति का आवाहन किया गया है ।

७] शकुंतला :

संवत १९७१ में गुप्तजी लिखित शकुंतला शीर्षक कृति का प्रकाशन हुआ । शकुंतला विश्वामित्र और मेनका अप्सरा की पुत्री है । माता-पितासे परित्यक्ता होनेपर महर्षी कण्वने उसका लालनपालन किया । जन्म के समय शकुन पक्षी उसपर छाया करते है अत: मुनि उसका नाम शकुन्तला रखते है । वह प्रखर बुध्दिमती एवं सद्‌गुणोंकी मानो खान है । अधिकांश स्थलोंपर निस्संदेह कालिदास का अनुवाद है । मौलिकता यदि है भी तो संक्षेपण और उपस्थितीकरण में है । नाटक की वस्तु को काव्य में परिवर्तित करने में है । कथा में मौलिक उद्‌भावना का अभाव है ।

८] तिलोत्तमा :

गुप्तजी लिखित "तिलोत्तमा" शीर्षक कृति का प्रकाशन संवत १९७२ में हुआ । यह नाट्यकृति धार्मिक, पौराणिक विषयवस्तुपर आधारित है । " तिलोत्तमा की विजयप्राप्ति अवश्य होती है । नाटक की कथा का विकास क्रमिक एवं स्वाभाविक है । नाटक चारित्रिक उत्कर्ष की दृष्टिसे विशेष महत्वपूर्ण नहीं है । इसके संवाद भी निर्जीव और अस्वाभाविक है । वातावरण की सृष्टि की दृष्टि से भी नाटककार सफल नहीं हुआ है । " १

१] मैथिलीशरण गुप्त का साहित्य - सीतलव्दारका प्रसाद - पृ. १६

९] **चन्द्रहास :**

गुप्तजी लिखित "चन्द्रहास" शीर्षक कृति का प्रकाशन संवत १९७३ में हुआ था । पौराणिक रूपक है । इसमें भाग्यवादी जीवनदर्शन का निरूपण किया है । शास्त्रीय दृष्टिकोणसे रूपक के विभिन्न उपकरणों का निर्वाह इसमें हुआ है । चन्द्रहास एक आदर्शवादी रचना है । नाटयविधा की दृष्टिसे यह रचना महान है ।

१०] **पत्रावली :**

इस लघुपत्रात्मक काव्य का प्रकाशन सन १९२३ में हुआ था । ओज पूर्ण शैली इनकी प्रमुख विशेषता है । इस काव्यमें मध्यकालीन इतिहास के कुछ प्रसिध्द व्यक्तियोंके ऐतिहासिक पत्रों को आधार बनाकर उनकी भावापन्न मनस्थितियों तथा आदर्शों का चित्रण किया गया है ।

११] **किसान :**

संवत १९७३ में ही मैथिलीशरण गुप्तजी लिखित "किसान" शीर्षक कृति का प्रकाशन हुआ था । इसमें गुप्तजीने भारतीय कृषक के करुण जीवन की व्यथा का मार्मिक रूपसे उहापोह किया है ।

१२] **वैतालिक :**

इस लघुकाव्य का प्रथम प्रकाशन सन १९१९ में हुआ था । यह प्रबंधात्मक रचना नही है । इस काव्य के व्दारा मानव की चेतना जागृत करने का प्रयास किया है । " वैतालिक एक लम्बा जागरणगीत है जिसमें कविकी राष्ट्रीय भावना प्रकर्ष पर है । इस रचना में कवि पश्चिमी भौतिक तथा पूर्वी अध्यात्मिक दृष्टिकोण के समन्वय से नवीन मार्ग का निर्देश

करना चाहता है । " [१] भारत-भारती की भाँति इसमे भी देशप्रेम की भावना ओतप्रोत है ।

१३] <u>अनघ</u> :

यह एक गीतिनाट्य है । संवत १९८२ में गुप्तजी लिखित "अनघ" शीर्षक कृति का प्रकाशन हुआ । इसमें गाँधीवादी जीवनदर्शन को बताने का प्रयास हुआ है । इस कृति का नायक "मघ" है जो एक व्यवहार कुशल और चतुर है । " मघ " के चरित्र को उज्ज्वल बनाने के साथ सुरभि और रानी के चरित्र को आधुनिक नारी भावना के अनरूप बनाने का प्रयत्न हुआ है ।

१४] <u>स्वदेशसंगीत</u> :

संवत १९८२ में ही "स्वदेशसंगीत" शीर्षक कृति का प्रकाशन हुआ । इसमें स्वदेश प्रेम की कविताएँ है । "स्वदेशसंगीत" में गुप्तजी का संदेश है कि शील की रक्षा, आत्मसंयम तथा मनोदमन ब्रम्हचर्य के व्दारा ही सम्भव है । इसमें कुल मिलाकर ६५ कविताएं संगृहीत है । इसमें कविने भारत वासियों को जागरण का संदेश देना ही उद्देश माना है । "फलत: स्वदेशसंगीत के माध्यमसे हम कवि की नवीन प्राचीन समन्वय की भावना, अंग्रेजों के प्रति विव्देष के अभाव आदर्श जीवन की कल्पना इत्यादि से सहज रूपमें परीचित हो सकते हैं । इसप्रकार काव्यगुण क्षीण होने पर भी भाषा एवं विचारधारा के विकास का सूचक होने के कारण गुप्तसाहित्य में प्रस्तुत संग्रह का ऐतिहासिक महत्व है ।" [२]

१] "कविवर मैथिलीशरण गुप्त और साकेत "- डॉ.ब्रजमोहन शर्मा-पृ-२९

२] "मैथिलीशरण गुप्त और वल्लतोल का तुलनात्मक अध्ययन" - के. एस. मणि - पृ. ४९

१५] पंचवटी :

संवत १९८२ में ही "पंचवटी" शीर्षक कृति का प्रकाशन हुआ । यह एक लोकप्रिय खण्डकाव्य है । "पंचवटी का कथानक 'रामायण' का शूर्पणखा प्रसंग है । किन्तु कविने अपनी कांतकल्पनासे उस प्रसंग में नवीन उद्भावना की है । शूर्पणखा निशाचरी माया ठहरी । किन्तु उसके स्वभाव को मानव मन शास्त्र के ढाँचे में ढालकर प्रस्तुत किया गया है ।" [१] छायावादी युगमें लिखित होने के कारण इस काव्यपर छायावादी भाषा और शिल्प का पूरा प्रभाव पडा है । भाषा पर्याप्त निखरी हुई खडी बोली है । इस खण्डकाव्य में गुप्तजी का अपना जीवन विषयक दृष्टिकोण भी अभिव्यक्त हुआ है जो रचना की ऐसी पंक्तियों में देखा जा सकता है -

जितने कष्ट - कण्टकों में है जिसका जीवन सुमन खिला ।
गौरव-गंध उन्हें उतना ही अत्र, तत्र, सर्वत्र मिला ।।

१६] हिन्दू :

मैथिलीशरण गुप्तजी लिखित "हिन्दू" शीर्षक कृति का प्रकाशन संवत १९८४ में हुआ था । गुप्तजीने जातिय और राष्ट्रीय भावनाओंका निरूपण किया है । यह ग्रंथ राजनीतिक भावनाप्रधान कृतियों की परंपरा में रखा जा सकता है । इसमें उद्बोधन और इतिवृत्तात्मक वर्णन का आधिक्य है । इसमें गुप्तजीने हिन्दूओं में जैन, बौध्द, सिक्ख आदि सभी को समाहित कर लिया है । इस काव्य की भाषा संस्कृतमिश्रित खडी-बोली है ।

१] "मैथिलीशरण गुप्त और वल्लतोल का तुलनात्मक अध्ययन" - के. एस. मणि - पृ. ५२

१७] शक्ति :

गुप्तजी लिखित संवत १९८४ में ही शक्ति शीर्षक ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ । यह वीररस प्रधान काव्य है । इसका मूल प्रतिपादय है कि संघ में ही शक्ति है । विषयवस्तु देव-दानव संग्राम है । इसमें महादुर्गाद्वारा महिषासुर एवं शुम्भ - निशुम्भ के वध का काव्यात्मक वर्णन किया है । भाषा पर्याप्त प्रौढ है ।

१८] वनवैभव :

यह काव्य सर्वप्रथम संवत १९८४ में प्रकाशित हुआ था । इसके कथानक का भी आधार महाभारत है । इसकी नूतनता में संवाद विशेष सहायक सिध्द हुए हैं । वनवैभव में पाण्डवों की पूर्व और वर्तमान स्थिति में तथा पाण्डवों और कौरवों की दशा में वैषम्य दिखाया गया है । द्रौपदी के करुण - स्निग्ध चित्र तो बरबस ही पाठक को आकृष्ट कर लेते है" । साकेत में उपलब्ध उर्मिला - लक्ष्मण के प्रेम परिहास की वनवैभव के संवाद भी आकर्षक है । युधिष्ठिर परम्परा से धीर प्रशांत चरित्र के रूपमें प्रतिष्ठित है । पर गुप्तजीने उन्हे और भी उदात्त रूपमें प्रस्तुत किया है । कवि लोभ से प्रेरित युध्द के पक्ष में न होकर धर्म युध्द के पक्षपाती है । इसमें रस योजना और चरित्र चित्रण अच्छे बन पडे है ।

१९] सैरन्ध्री :

इस कृति का प्रकाशन संवत १९८४ में हुआ था। यह मुख्यत: करुणरस प्रधान कविता है । जिसमें अनुभूतिपरकता विशेषरूपसे दिखायी देती है । इसकी रचना अज्ञातवास के समय "सैरन्ध्री" छद्मनाम धारिणी द्रौपदी एवं कीचक के चिर प्रसिध्द कथानक को लेकर हुई है । रस की दृष्टि से यह काव्य सफल है । इसकी प्रतिपादन शैली सर्वथा नवीन है, अत: रोचकता आद्योपान्त विद्यमान है ।

करुण रस इसमें अंगी है । सजीव उपमान चित्रांकन एवं चित्रमयी वर्ग-योजना से यह कृति सुन्दर बन पडी है ।

२०] बक संहार :

इस खण्डकाव्य का प्रकाशन संवत १९८४ में हुआ था । यह पौराणिक रचना है । इसमें कुन्ती के आदर्श त्याग की कथा है । इसका आधार महाभारत है । यह एक लघुकथात्मक काव्य है, सर्गबध्द नहीं है । काव्य में करुणरस की प्रमुखता है, परन्तु प्रासंगिक रुपमें वात्सल्य, प्रेम, उत्साह आदि भावों को भी व्यंजना हुई है । भाषा कांतिमयी तथा प्रांजल है । गुप्तजी के चरित्रप्रधान खण्डकाव्यों में बक संहार का उंचा स्थान है । " कवि का शिल्प बक संहार में और भी निखरा हुआ है, उसकी तूलिका अब सहा गयी है । अनेक चित्र दर्शनीय हैं । विप्रगृह वर्णन में स्थूल वस्तुओंके साथ साथ उसके शान्त वातावरण एवं सात्त्विक प्रभाव तक का सटीक अंकन है । इसके अतिरिक्त शब्द-मैत्री, उक्ति सौन्दर्य एवं अप्रस्तुत विधान भी सराहनीय है और सजीव संवादो के कारण तो पुस्तक की रोचकता व्दिगुणित हो गयी है । इसकी भाषा पूर्व कृतियों के समान ही है, फिर भी कांति कुछ अधिक है । गुप्त साहित्य में बक संहार शिल्प की दृष्टि से पंचवटी के समकक्ष है । " [१]

२१] गुरुकुल :

गुरुकुल बृहतकाव्य का प्रकाशन १९८५ में हुआ । इसमें मुख्य रुपसे सिख गुरुओंके जीवन - चरित्र और वीरता का वर्णन किया है । शिल्प की दृष्टिसे गुरुकुल का स्थान गुप्तजी के काव्यों मे निम्न कोटी का

१] "यशोधरा की टीका " - प्रो. श्याम मिश्र - पृ. १२

नहीं है । काव्य में यत्र - तत्र सुन्दर चित्रांकन, अप्रस्तुत विधान, मार्मिक एवं सूक्ष्म वर्णन आदि मिलते है । भाषा परिमार्जित खडीबोली है । इसमें सुन्दर संवाद बन पडे है। प्राचीन कथानक के साथ युगीन प्रभाव दिखाई देता है । गुप्तजी की असाम्प्रदायिक दृष्टि इसमें परिलक्षित होती है ।

२२] <u>विकटभट</u> :

विकटभट शीर्षक कृति का प्रकाशन संवत १९८५ में ही हुआ । यह ऐतिहासिक काव्य है । इसमें जोधपुर के राणा सिजयसिंह के इर्ष्या भावजन्य कुकृत्यों का वर्णन और देवीसिंह और जैतसिंह के वीरोचीत कार्यों का भी इसमें वर्णन किया है । इसमें प्रमुखता वीररसकीही है । इसमें प्रेम, घृणा, शोक आदि भावों की अभिव्यक्ति हुई है । इसमें संवाद बडे सजीव एवं नाटकोचित बन पडे है । इसकी भाषा शुध्द खडीबोली है ।

२३] <u>झंकार</u> :

गुप्तजी लिखित "झंकार" शीर्षक कृति का प्रकाशन संवत १९८६ में हुआ । इस कृतिपर छायावाद और रहस्यवाद का भी प्रभाव पडा है । इसमें गीत भक्तिपरक गीतों के लिए तीव्रतम अनुभूति अपेक्षीत है । " झंकार गुप्तजी की प्रथम रचना है, जिसमें गीतितत्व निखरकर सामने आया है । इस कृति में धार, पारावार, नक्षत्र निपात पुष्पांजलि, झंकार, चयन, सांत्वना आदि स्वानुभूति व्यंजक गीत है, जिनमें गुप्तजी के विषण्ण मन की छाप है। इन गीतों में उनका रुदन है, प्राकृतिक नियमों के समक्ष विवशता है और भावनाजन्य दौबल्य एवं अपूर्णतापर धीरेधीरे विजय प्राप्त कर लेता है जहाँ उन्होंने जीवन की जय में 'जीवनपर सौ बार मरुं' कहकर जीवन के प्रति आस्था प्रकट की है । " [१]

१] "कविवर मैथिलीशरण गुप्त और साकेत " - डॉ. ब्रजमोहन शर्मा पृ. २९, ३०

२४] साकेत :

गुप्तजी लिखित "साकेत" महाकाव्य का प्रकाशन संवत १९८८ में हुआ। साकेत लिखने की प्रेरणा रामकाव्य की उपेक्षित पात्री उर्मिला की वेदना से मिली। इसमें पारिवारिक सम्बन्ध, नारी की महत्ता, राजा प्रजा का सम्बन्ध, कला, देशभक्ति, उपयोगितावाद पर व्याख्यान इसमें है। साकेत वस्तुत: जीवन का काव्य है। इसमें प्राचीनता की भूमिपर खेद होकर नूतनता का संदेश दिया है। डॉ. नगेंद्र के शब्दों का प्रयोग किया जाय तो कहा जा सकता है - " उसमें [साकेत में] हमारे सुख दु:ख की कहानी अधिक स्पष्ठ है। साकेत स्वरूपसे जीवन काव्य है। उसमें भारतीय जीवन को ज्ञान के व्यापार के रूपमें देखा है। भारतीय जीवन आज का या पहले का? यह प्रश्न किया जा सकता है। परन्तु इस प्रश्न से जीवन की एकता टूट जाती है। भारतीय जीवन आज पहले के अन्त विभागों में बॅटकर अखण्ड नहीं रहता। हमारा आज पूर्व का ही प्रतिफलन है और आज और पूर्व दोनोंमें व्याख्या साकेत में है। उसमें प्राचीन का विश्वास और नवीन का विद्रोह दोनों समन्वित होकर एक हो गये है। इसलिए साकेत में वर्तमान की सभी समस्याएँ है। परन्तु उनका समाधान भरपूर भी मौजूद है - ' व्यथा रहे पर साथ साथ ही समाधान भरपूर ' इसी दृष्टि से वह भारतीय जीवन का प्रतिनीधी ग्रन्थ है। " १

२५] यशोधरा :

संवत १९८९ में काव्य साहित्य के क्षेत्र में गुप्तजी की "यशोधरा" शीर्षक रचना प्रकाशित हुई। इसका अधिकांश भाग इतिहास सिध्द है, किंतु अनेक प्रसंग कल्पनापरक है। इसका मुख्यरस वियोगशृंगार है। इसकी कथा सिध्दार्थ के महाभिनिष्क्रमण से सम्बन्धित है। इसमें माता और

१] "साहित्यिक निबन्ध" डॉ. शान्तिस्वरूप गुप्त - पृ. ५७४

पुत्र के संवाद में स्वाभाविकता है । यशोधरा की भाषा शुध्द और खडीबोली है जो गीतिकाव्य के उपयुक्त कांतकोमल भी है । इसमें भारतीय नारी जीवन के त्याग और सहिष्णुता की करुणा व्यंजना दिखाई देती है ।

२६] द्वापर :

गुप्तजी की इस काव्यकृति का प्रकाशन संवत १९९३ में हुआ । द्वापर में विधृता नामक उपेक्षिता प्रसंग को लेकर करुण रस की उद्भावना की है । "द्वापर १६ खण्डों में विभक्त आत्मसंलाप शैली में लिखित प्रगीतात्मक प्रबंधकाव्य है, जो वर्णनात्मक है । इसमें श्रीकृष्ण के ब्रजज से लेकर मथुरातक के जीवन की और पुन: मथुरा से चलकर द्वारिकामें राज्यधिराज बनने तक की कथा है । "द्वापर' की प्रत्येक आत्माभिव्यक्ति में हृदय के आवेग का मर्मस्पर्शी निरूपण हुआ है और प्रत्येक पात्र के अन्त:करणमें विद्यमान सुख:दुख आशा तृष्णा, क्षोभ, आक्रोश आदि विविध भावनाओंके सजीव चित्र है । सभी कथोपकथनों में नाटकीयता चित्रोपमता, प्रभावोत्पादकता, सजीवता सरसता जैसे गुण विशेषत: दृष्टव्य है । " [१]

२७] सिध्दराज :

सिध्दराज ऐतिहासिक खण्डकाव्य का प्रथम प्रकाशन १९३६ में हुआ था । सिध्दराज का कथानक अत्यन्त रोचक तथा सुरुचिपूर्ण है । कथा का विकास क्रमिक एवं सुसंगत है । डॉ.प्रेमशंकर कहते है "सिध्दराज में पौराणिकता से हटकर इतिहास मे रुचि लेना कवि के व्यक्तित्व विकास का एक नया संकेत है ।" [२] सिध्दराज में गुप्तजीने आधुनिकरण लाने का प्रयत्न

१] "कविवर मैथिलीशरण गुप्त और साकेत"डॉ.ब्रजमोहन शर्मा-पृ.३४

२] "मैथिलीशरण गुप्त" - डॉ. आनंदप्रकाश दीक्षित- पृ.१७३

किया है । इस में मुख्य पात्र सिध्दराज जयसिंह । शूरवीरता एवं क्षात्रत्व का उज्ज्वल चित्रण इसमें है ।

२८] मंगलघट :

संवत १९९४ में गुजराती के स्फुट काव्य संग्रह का मंगलघट शीर्षक से प्रकाशन हुआ । इसमें अनुभूतिपरक कथात्मक एवं नीतिपरक कविताएँ है। इसमें गुप्तजी की संवत १९६५ से लेकर संवत् १९९३ तक की सभी प्रकार की कविताओं का संग्रह है । मंगलघट में कुल मिलाकर ६२ कविताएँ संग्रहीत है । मंगलघट में मांगलिक स्वर प्रधान है । मंगलघट की कविताओं की भाषा में भाषा वैविध्य है, अधिकतर खडीबोली का प्रयोग कविने किया है ।

२९] नहुष :

संवत १९९७ में गुप्तजी की लिखी हुई "नहुष" शीर्षक काव्यकृति प्रकाशित हुई । इसका मूलरूप महाभारत से ग्रहण किया है । इसकी विशेषत: यह है, कि मनुष्य पतित होकर भी उन्नति के लिए चेष्ठा करता है । इसमें कहा है कि सत्कार्यों से मनुष्य उन्नत और कुकर्म से पतीत होता है । " कथानक को रोचक बनाकर कविने नूतन उदभावानाएँ की है । इस काव्य में करूण का सुन्दर परिपाक हुआ है । शृंगार एवं रौद्र भी उपलब्ध होते है । भाषा परिमार्जित खडीबोली है । संस्कृत के अप्रचलित शब्दों का भी प्रयोग है । अभिशाप्त नहुष के स्वर्ग भ्रष्ट होनेपर कविने उसके प्रगति के दृढ निश्चय को प्रकट किया है । गुप्तजीने इसमें मानव स्तवन किया है । "[1]

१] "मैथिलीशरण गुप्तजी का साहित्य" डॉ. द्वारकाप्रसाद मीतल पृ. ३३

३०] कुणाल गीत:

कुणालगीत ग्रन्थ का प्रकाशन संवत् १९९९ में हुआ । इस प्रबन्धकाव्य में अशोक के पुत्र कुणाल की कथा का वर्णन किया गया है । कथा अत्यन्त रोचक है । इसके सभी गीतों में उच्च कोटि की गेयता है । भाषा पर्याप्त प्रांजल खडीबोली है । छंद विधान की ओर कविने पर्याप्त ध्यान दिया है ।

३१] अर्जन और विसर्जन :

इस लघु खण्डकाव्य का प्रकाशन संवत १९९९ में हुआ । इसमें नाटकीयता और चमत्कारिकता दिखायी देती है । इनमें से प्रथमकृति छन्दविहित है, तथा व्दितीय छन्दोबध्द रचना है । इसमें भौतिक सुख की अपेक्षा धार्मिक मुल्य को ही महत्त्व दिया है । दोनों काव्य अपने आशय, अभिव्यक्ति, प्रणाली और भाषा की दृष्टि से श्रेष्ठ हैं ।

३२] विश्ववेदना :

विश्ववेदना कृति का प्रकाशन संवत १९९९ में ही हुआ था । इसमें मानवजाति की विविध समस्यापर कविने मत व्यक्त किया है । आज की औद्योगिक और वैज्ञानिक सभ्यता के कारण मनुष्य का कैसा विकास हुआ, इनके बारे में ही विवेचन और विश्लेषण किया है । और इसमें विज्ञान की विध्वंसकारी प्रगति एवं उसके कार्यकलापों का उल्लेख किया है । इस ध्वंसकारी विकाससे मनुष्यत्त्व कां लाज रखना कवि की आशा है । "विश्ववेदना में आद्यत एक ही बात की चर्चा है कि आज ज्ञान विज्ञान तथा नूतन अविष्कारोसे निर्माण के स्थानपर ध्वंस ही हो रहा है तथापि प्रत्येक पद्य अपने आपमें पूर्ण अथवा स्वतंत्र्य भी है । "[१]

१] "यशोधरा की टीका" - प्रो.श्याम मिश्र - पृ. १५

३३] **काबा और कर्बला :**

इस खण्डकाव्य का प्रकाशन संवत १९९९ में ही हुआ। इनका सम्बन्ध इस्लामी, इतिहास की प्रसिध्द घटनाओंसे है। इस्लामधर्मावलम्बियों का गुण भी उनमें निरूपिता किया है। " काबा और कर्बला " में रस प्राय: क्षीण है। इसका कारण बौध्दिकता है। कर्बला में वात्सल्य, उत्साह, त्याग आदिसे परिपुष्ठ शोक भावना की व्यंजना हुई है। इसका काव्यशिल्प भी नहीं कहा जा सकता। भाषा में पूर्व रचनाओं की तरह भावाभिव्यक्ति कम है। पात्रानुकूल संवाद इसकी विशेषता है।

३४] **अजित :**

अजित शीर्षक काव्यकृति का प्रकाशन गुप्तजीने संवत २००३ में किया। इसकी भाषा शैली संस्कृतनिष्ठ है, और इसमें मुख्यत: यथार्थ घटनाओंकाही संयोजन किया गया है। इसमें कविने जेलजीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत किया है। साथ साथ ग्रामीण जीवन और उनकी विविध समस्याएँ सामाजिक और राजनैतिक दृष्टि से दण्डित व्यक्तियों के सुन्दर चित्र आदि भी मिलते हैं। अजित वर्णनात्मक काव्य है। इसमें भावतत्व की अपेक्षा वस्तु का प्राधान्य है। अंग्रेजी के बहुप्रचलित शब्दों का इसमें प्रयोग हुआ है। उर्दू के शब्द भी प्रयुक्त हुए है।

३५] **हिडिम्बा :**

गुप्तजी लिखित "हिडिम्बा" शीर्षक खण्डकाव्य का प्रकाशन संवत २००७ में हुआ। हिडिम्बा रचना धार्मिक, पौराणिक विषय वस्तुपर आधारित रचना है। इसमें महाभारत के एक कथा प्रसंग को कथानक का आधार बनाया है। इस काव्यका मुल उद्देश्य है कि आधुनिक परिप्रेक्ष्य में संघर्ष को मिटाकर राष्ट्रीय एकता की भावना को सुदृढ करना ही है। इस काव्य में प्रमुखता शृंगार रस को है, जो वीररस की पृष्ठभूमीपर

खूब निखर उठा है। काव्यमें हिडिम्बा के नारीत्व की आदर्शवादी परिणति गुप्तजी के संवेदनापूर्ण, दार्शनिक दृष्टिकोण की परिचायिका है।

३६] अंजलि और अर्घ्य :

संवत २००७ में ही गुप्तजीव्दारा प्रणीत अंजलि और अर्घ्य शीर्षक रचना का प्रकाशन हुआ। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी को श्रध्दांजलि के रूपमें लिखि गयी यह कृति है। शोक काव्य की दृष्टिसे यह अत्यन्त सफल काव्य है। काव्य में इस का पूर्ण परिपाक न होकर शोक, लज्जा तथा ग्लानि की भाव सबलताही प्रकट हुई है, इसका कारण अनुभूति की तीव्रता का अभाव है।

३७] पृथ्वी पुत्र :

पृथ्वीपुत्र शीर्षक कृति का प्रकाशन संवत २००७ में ही हुआ। इसमें मानवतावादी दृष्टिकोणको ही प्रधानता दी है। इनमें तीन संवादो का संग्रह किया है। इनमें 'दिवोदास' प्रतीक के पहले अंक छपा था। जयिनी उसके भी कई वर्ष पूर्व " सुधा " में छपी थी। पृथ्वीपुत्र इसी वर्ष "नया समाज" में भी प्रकाशित हुआ है ये क्रमशः पौराणिक ऐतिहासिक और काल्पनिक कथानक है।

३८] जयभारत :

संवत २००९ में गुप्तजी का एक बृहताकार प्रबंध काव्य "जयभारत" शीर्षक से प्रकाशित हुआ। इसमें कथा प्रसंगों एवं आख्यानों का वर्णन महाभारत के ढंगपरही अलग अलग शीर्षकदेकर किया गया है। "जयभारतमें आदि पर्व, बनपर्व, विराटपर्व और उद्योगपर्व की महाभारतीय मूल कथा को

अधिक दिया गया है, और भीष्मपर्व तथा उसके परवर्ती पर्वों को अत्यन्त संक्षिप्त कर दिया गया है । ग्रन्थ का तृतीयांश आदिपर्व की प्रसंग सृष्टि में समर्पित है । शान्ति पर्व से लेकर मौसलपर्व तक के पाँच पर्वों की कथा का अन्य काव्यांश के थोडेसे पदयोंमें वर्णित है । " [१]

३९] युध्द :

इस लघुकाव्य का प्रथम प्रकाशन संवत २००९ में हुआ । इस काव्य में महाभारत के युध्द की विभीषिका और भयंकरता का वर्णन किया गया है । भारत के १८ दिनों के युध्द का संक्षिप्तिरूप प्रस्तुत किया गया है । गुप्तजीने युध्दसम्बन्धी अनेक महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किये है । रसाभिव्यक्ति एवं शैली की दृष्टिसे युध्द महत्त्वपूर्ण कृति है ।

४०] राजा और प्रजा :

संवत २०१३ में गुप्तजी लिखित "राजाप्रजा" शीर्षक ग्रन्थ का प्रकाशन हुआ । इसमें गुप्तजीने राजा और प्रजा के संवाद के रूपमें देश की राजनीतिक स्थिति की समीक्षा की है । यह बौध्दिक रचना है । गुप्तजीने राजतंत्र और प्रजातंत्र दोनों पक्षों को प्रस्तुत किया है ।

४१] विष्णुप्रिया :

संवत २०१४ में गुप्तजी लिखित "विष्णुप्रिया " शीर्षक खण्डकाव्य का प्रकाशन हुआ । इसमें प्रमुख पात्र चैतन्य महाप्रभु की पत्नी विष्णुप्रिया है । अपने जीवन को सम्पूर्णतया पति के चरणोंमें समर्पण कर आंसुओं को जब्त करके जीनेवाली विष्णुप्रिया का चरित्र चित्रण कविने अत्यंत सुन्दर ढंग से किया है । इस काव्य में करुणरस की प्रधानता है । 'भाषा प्रसाद और

१] "मैथिलीशरण गुप्त का साहित्य"-डॉ. व्दारका प्रसाद मीतल-पृ. २६२

माधुर्य पूर्ण है । विष्णुप्रिया विरहिणी के रूपमें दिखायी देती है । विष्णुप्रिया की अंतरात्मा के स्वर उनमें फूट पड़े हैं । उसका अधिकांश जीवन अतृप्ति, असन्तोष और पीडा में बीता । विष्णुप्रियामें कविने वात्सल्य, करुण, शृंगार की योजना की । इसमें शृंगार ही प्रधान है । विरह के बड़े करुण और मार्मिक चित्र इस काव्यमें आये हैं । गुप्तजी शतप्रतिशत भारतीय हैं और भारतीय आदर्शों की स्थापना अन्य ग्रन्थो की भाँति विष्णुप्रिया में की है । " [१]

४२] <u>भूमि भाग</u> :

इसका प्रथम प्रकाशन २०१० में हुआ । गुप्तजीने विनोबाजी के भूदान आन्दोलन से प्रेरणा पाकर इसके प्रणयन के लिए प्रस्तुत हुए हैं । "भूमिभाग" के गीत उसमें से अलग निकालकर पढ़ने पर उसमें मार्क्सके सिध्दांत की सम्भावना भी कम नहीं । किंतु गुप्तजी अहिंसा के पुजारी है ।

ये है गुप्तजी की मौलिक रचनाएँ जो उनकी अनवरत काव्यसाधना का परिचय देती हैं । इनके अतिरिक्त कविने कुछ रचनाओं के अनुवाद भी प्रस्तुत किये है । जिनमें प्रमुख है,

१] विरहिणी ब्रजांगना [बंगलासे]
२] पलासी का युध्द [बंगलासे]
३] वीरांगना [बंगलासे]
४] मेघनाद वध [बंगलासे]
५] स्वप्न वासवदत्ता [बंगलासे]
६] रूबाइयात उमर खय्याम [फारसीसे]

१] "मैथिलीशरणगुप्त का साहित्य" - डॉ. व्दारकाप्रसाद मितल पृ. २७०

इस प्रकार मैथिलीशरण गुप्त के जीवन और कृतित्व के परिचय से हम कह सकते है कि गुप्तजी भारतीय संस्कृति के अटल पुजारी, आदर्श मानवता के आराधक, भावुक राष्ट्रीय कवि है, जिनका कवि आदर्श की भावुकता में कभी कभी अभिभूत सा हो जाता है । अपनी अनवरत साहित्य साधना के माध्यमसे गुप्तजीके हिन्दी भाषामें माधुर्य कि जो अवतारता की है उसे हिन्दी के पाठक भूल नहीं सकते । आचार्य शुक्लजी के शब्दोंमें " गुप्तजीके साहित्य स्वरूप का मूल्यांकन ध्यान देने योग्य है । गुप्तजी वास्तव में सांमजस्यवादी कवि है । किसी प्रतिक्रिया का दर्शन अथवा मद में झुमकर कुछ लिखनेवाले कवि नहीं, सब प्रकार की उच्चता से प्रभावित होनेवाला हृदय प्राप्त है । प्राचीन के प्रति पूज्य भाव और नवीनता के प्रति सम्यक उत्साह की उनकी साहित्यिक विशेषताएँ है । " [१] गुप्तजी हिन्दी के उन उन्नायकों में से थे जो हिन्दी के लिए ही जीते रहे । भारतेन्दुजी की विमल परम्परा के निज भाषा उन्नति एवं उन्नति की मूल के वह आजतक एकमात्र स्वार्थवाह थे ।

१] "मैथिलीशरण गुप्त " – शरद ओंकार – पृ. ८७